

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 23/07/2016

● अंक - 594 ● तारीख - 24 जुलाई 2016, श्रावण कृष्ण - 05 ● रविवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया

● पृष्ठ - 01

सत्यसाई बाबा (अनमोल वचन)



:- पुण्यवृत्ति :-

कृष्ण प्रेम के स्वरूप थे। इसलिए प्रेम ही ऐसी पुण्यवृत्ति है जिसको वह अधिकतम पसन्द करता है। प्रेम को दया से पूर्ण ठोस कामों के रूप में व्यक्त होना चाहिए। जब तक तुम प्रेम-मूर्ति श्रीकृष्ण में मिलकर एक न हो जाओ तब तक हृदय में दया उन्नत करो तथा सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करो।

दोहावली

प्रेम बिकांता मैं सुना,
माथा साटै हाटा
पूछत बिलम न कीजिए,
तन छिन दीजै काटा।

प्रेम का मूल्य, प्रेम की कीमत आँकी नहीं जा सकती। प्रेम अनमोल होता है। संत कबीर दास जी कहते हैं कि प्रेम को बिकते हुए मैंने सुना है किन्तु उसके बदले शीश काटकर देना होता है।

एक ते जान अनन्त, अन्य एक हो आया

एक से परचे भया, एक बाहें समाया।

एक से अनेक हुए और पुनः एक हो जाओगे। जब तुम सभी भगवान को जान लोगे तब तुम भी एक में ही मिल जाओगे।

प्रवचन



व्यक्ति को गृहस्थ धर्म के बाद वानप्रस्थ आश्रम को अपनाया चाहिए, क्योंकि वन बनने की प्रयोगशाला है। जो वन गया सो बन गया, जो भवन में अटक गया, वो लटक गया।

- मुनि तरुण सागर जी

तत्त्व ज्ञान

कोई भी दुःखद घटना होने पर स्वयं से पूछें, 'इसके पीछे क्या कारण है?' इस तरह आपको स्वयं से सही सवाल पूछने की आदत विकसित करनी होगी। इस कदम में सुस्ती से मुक्ति पाने हेतु स्वयं से सवाल पूछना बहुत महत्वपूर्ण कदम है। 'मैं कौन हूँ?' सवाल इतना गूढ़ है कि इसके लगातार पूछने पर आप महसूस करेंगे कि सवाल ही जवाब बन जाएगा। 'आप कौन हो?' इस सवाल में ताकत है। बाकी भी अलग मंत्र आप इस्तेमाल करते हैं मगर वे आपके हृदयस्थान को वैसे नहीं खोलते, जैसे 'तुम कौन हो', सवाल खोलता है। इसलिए कई बार कुछ लोगों को समझ में न आने पर भी यदि वे स्वयं से 'मैं कौन हूँ?' जैसे सवाल लगातार पूछते रहने से उनमें धीरे-धीरे समझ की गहराई उत्तरने लगती है। जाप का वही महत्त्व है। कुछ बातों का जाप चलना चाहिए ताकि अंदर जो हृदयस्थान में दबा हुआ है, उसे खुलने का एक मौका मिले।

सुविचार

परिवार वह सुरक्षा कवच है,
जिसमें रहकर व्यक्ति
शांति का अनुभव करता है।

इस शिव मंदिर की मूर्तियों से आती है ठंडी हवा



बाहर जितनी गर्मी अंदर उतनी ठंड,
चमत्कारिक है यह मंदिर

यह जगह ओडीशा के टिटलागढ़ में एक चमत्कारी शिव मंदिर है। देशभर में टिटलागढ़ भीषण गर्मी के लिए जाना जाता है। यहाँ कुम्हड़ा पहाड़ की पथरीली चट्टानों के कारण तापमान बहुत ज्यादा रहता है। इस पहाड़ की ऊंचाई पर टेम्परेचर 55 डिग्री तक पहुँचता है। इतनी गर्मी पड़ने के

बावजूद कुम्हड़ा पहाड़ के एक हिस्से में ऐसा मंदिर भी है जहाँ बेहद ठंडक रहती है। बाहर की चिलचिलाती गर्मी से जैसे ही आप मंदिर के अंदर प्रवेश करेंगे तो आपको ए.सी. जैसी कूलिंग का एहसास होगा, जबकि यहाँ कोई ए.सी. या कूलर नहीं लगा है। बाहर जितनी गर्मी होती है अंदर उतना

ठंडा रहता है। इस चमत्कारी मंदिर में भगवना शिव और मां पार्वती की मूर्ति है। ऐसा माना जाता है कि इन मूर्तियों से ही ठंडी हवा आती है, जो यहाँ के वातावरण को गर्म नहीं रहने देती है। जब मंदिर के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं तो इन हवाओं से अंदर बहुत ठंडक हो जाती है। कई

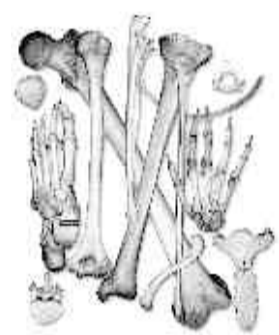
बार यहाँ इतनी ठंड बढ़ जाती है कि पुजारियों को कंबल ओढ़ना पड़ता है वहीं मंदिर के बाहर इतनी गर्मी होती है कि 5 मिनट में आप पसीने से पूरी तरह तर हो जाएँ और हो सकता है कि लू लग जाए। गर्मी में भी इस मंदिर में ठंडक बने रहने के चमत्कार के रहस्य का सही कारण अभी तक कोई नहीं जान पाया है।

हमारी हड्डियाँ

हम अपनी हड्डियों की परवाह तब तक नहीं करते जब तक कि कोई हड्डी टूट न जाए या बुढ़ापे में कोई बीमारी न हो जाए। हमारी हड्डियों को जीवनभर देखभाल और पोषण की आवश्यकता होती है। कंकाल तंत्र में हड्डियाँ, नस, अस्थि, अपास्थि आदि शामिल हैं। यह कई महत्वपूर्ण कार्य करता है जैसे कि रक्त की संरचना को बनाए रखना, शरीर का मूवमेंट और नई रुधिर कोशिकाओं का निर्माण करना आदि। हाथ-पैरों में : शरीर की आधी से ज्यादा हड्डियाँ हाथ और पैरों में ही होती हैं

शरीर में हड्डियों का विभाजन समान नहीं होता है। हाथ-पैरों में अन्य के बजाय ज्यादा हड्डियाँ होती हैं। हाथ में 27 और पैर में 26 हड्डियाँ होती हैं। इसका मतलब है कि दोनों हाथों और दोनों पैरों में मिलाकर 106 हड्डियाँ होती हैं। इस प्रकार आपके शरीर की आधी से ज्यादा हड्डियाँ हाथ और पैरों में ही होती हैं। हड्डियाँ सबसे ठोस नहीं : हड्डियाँ मानव शरीर की सबसे ठोस चीज नहीं है। मानव शरीर में सबसे ठोस दूध इन्मेल (दाँत का आवरण) होता है। दूध इन्मेल दाँतों की रक्षा

करता है और इन्हें बनाए रखता है। कैल्शियम जैसे मिनरल्स की मौजूदगी के कारण यह मजबूत होता है। हड्डियाँ स्टील से ज्यादा मजबूत : हड्डियाँ स्टील से ज्यादा मजबूत हैं यदि हम मानते हैं कि हड्डियों में वजन होता है तो हम इसकी तुलना किसी मजबूत चीज से कर सकते हैं, हड्डियाँ स्टील की तुलना में छह गुना ज्यादा मजबूत होती हैं। छोटे बच्चे में युवा से ज्यादा हड्डियाँ : एक वयस्क व्यक्ति के शरीर में 206 हड्डियाँ होती हैं जबकि बच्चों के शरीर में 300



हड्डियाँ होती हैं। क्योंकि उनमें से कुछ गल जाती हैं और कुछ आपस में मिल जाती हैं। पैर की उंगलियों की हड्डी कमजोर : शरीर में पैर की उंगली की हड्डी सबसे कमजोर होती है। ये अक्सर और कभी भी टूट जाती हैं। इनका इलाज कराने के अलावा आपके पास कोई चारा नहीं होता है।

ध्यान के लिए आसन अनिवार्य



भारत के ऋषियों ने जीवन के रहस्यों को जाना, उन्हें सुरक्षित रखा और आने वाली पीढ़ी को संप्रेषित किया। उनके द्वारा खोजी गई ये पद्धतियाँ धर्म, अध्यात्म और योग के नाम से आज भी प्रचलित हैं। प्रेक्षा-ध्यान उनमें से एक खोजी गई अभिनव पद्धति है, जिसमें अध्यात्म विज्ञान की विकसित शाखाओं का समुचित उपयोग किया गया है। प्रेक्षा पद्धति आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि उसमें सिद्धांत की नीरस चर्चा की अपेक्षा प्रयोग का प्राणवान सुयोग है। इसमें किसी को मानने के लिए बाध्य नहीं किया जाता अपितु जानने

का प्रशिक्षण दिया जाता है। परिणामतः प्रेक्षा-शिविरों में सामान्य जन से लेकर उच्च शिक्षित व्यक्ति भी समान रूप से अभिरुचि प्रदर्शित करते हैं। प्रेक्षाध्यान में आसन, प्राणायाम, मुद्रा और यौगिक क्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

जब तक आसन नहीं सधता, मुद्रा ठीक नहीं हो सकती और न ही ध्यान की पूर्व तैयारी ही हो सकती है क्योंकि बिना आसन साधना में बैठ जाने वाला शरीर स्थिर नहीं रह पाता। जबकि कायोत्सर्ग की पहली शर्त है- शरीर की स्थिरता। दूसरी शर्त

है-शिथिलता। स्थिरता और शिथिलता इन दोनों के बिना कायोत्सर्ग पूर्ण नहीं होता। आसन की सिद्धि कायोत्सर्ग और चैतन्य के प्रति जागरूकता के बिना नहीं हो सकती है क्योंकि चित्त शरीर की अस्थिरता और चंचलता में ही अटक कर रह जाता है। प्राणायाम श्वास- प्रेक्षा का आधार है। मुद्राओं का भावों के साथ सीधा सम्बंध होता है। 'जैसा भाव, वैसी मुद्रा और जैसी मुद्रा, वैसा ही भाव।' दोनों में अन्योन्याश्रय संबंध है। ध्यान के लिए आसन, मुद्रा, प्राणायाम और योगिक क्रियाओं के अभ्यास की आवश्यकता होती है।

मानव मन के बोल



कर्म वह अच्छा, जिससे आमजन को लाभ मिले।

गतांक से आगे...

जब मेरा नम्बर आया तो उन्होंने कहा कमरा खाली नहीं है चलो-चलो। उधर चलो।

मैंने कहा साहब कमरा नहीं तो एक अलमारी दे दो। नहीं-नहीं एक अलमारी भी खाली नहीं है। बहुत रिक्वेस्ट की। भाई कह दिया न एक बार जल्दी चलो-उधर चलो। अलमारी खाली नहीं है। नहीं होगी खाली वो भी क्या करे? 100 अलमारी और 100 अलमारी के ताले लगे हुए हैं। किसी को दे रखी तो वो भी क्या करें? और वहीं पर होटलों वाले खड़े रहते थे। चलिए छः सौ रुपये में कमरा दे देता हूँ पास में ही है। भाई छः सौ रुपये हमारी जेब में होवे तब ना? सोचा क्या करेगा कैलाश? तेरे को अलमारी तो मिली नहीं, तेरे को धर्मशाला में कमरा मिला नहीं चल 5-6 जगह वहाँ चला जा। होटल में रोटी खानी है, जो खाले क्या करना है। स्टेशन पर ही सो जाना। और मुझे आज भी याद है, कई बार 5-7 बार तो पक्का याद है, अच्छी तरह से याद है, जब मैं यात्रियों के लिए जो बैठने की जगह होती थी, अहमदाबाद रेलवे स्टेशन। अब रात को वहाँ सोया तो दो-तीन बार पुलिस वालों ने कहा उठो-उठो। ये सोने की जगह नहीं है। डण्डा फटकारा। उनको राम-राम करके दूसरी जगह ढूँढ के वहाँ सोया। टुवाल या चद्वर भी नहीं थी ओढ़ने के लिए। और जब ठण्ड लगी तो टुवाल को ऊपर कर रहा हूँ नीचे कर रहा हूँ। केवल मेरी बात नहीं है। आज भी मेरे सैकड़ों भाई कभी चले जाना रेलवे स्टेशन अहमदाबाद में देख लेना, दिल्ली देख लेना। रात भर पैरों को सिकुड़ कर पेट में लगा करके पाँच बजे सुबह की ट्रेन हैं। रात को 9 बजे आ गये। नहीं हैं, पैसा उनके पास। धर्मशाला आजकल कई जगह तो हमने देखा धर्मशालाएँ होटलें बन गई हैं। कई जगह ऐसी धर्मशालाएँ जो एक जमाने में धर्मशालाएँ थी, अब 400 रुपये रोज लेते हैं। आठ सौ रुपये रोज लेते हैं। छः सौ रुपये रोज लेते हैं। धन्यवाद हैं उनको जिन्होंने धर्मशाला के शुरुआत में बनाये रखा है। उनके प्रति हम आभारी हैं। बिजली सफाई के लिए 100 रुपया लेले तो बहुत अच्छी बात है, 100 रुपया ले सकते हैं। उसमें उनको कुछ लोगों के लिए रखना चाहिए बिल्कुल फ्री दे। भाई बिजली पानी का तो भगवान ने आपको दिया है। जिससे 100 रुपये ले रहे हो 50 रुपया बिजली खर्च लगता है। तो 50 रुपया किसी गरीब से मत लीजिये। नारायण सेवा तो अचरज है अचरज! जहाँ एक पैसा भी लिया नहीं जाता। तीन-चार हजार लोगों का भोजन अचरज है। इसलिए इन गरीबों के हित में हमें करते जाना है। अपने मान-अपमान की चिंता नहीं है। अरे! अपमान तो कोई करता भी नहीं है। सेवा करने वालों का तो मान बहुत होता है। आप भी सेवा करेंगे आपका मान बढ़ेगा, और कभी बहुत ज्यादा मान में एक आधी बार अपमान हो गया तो समझना भोजन के साथ एक लाल मिर्ची तीखी आ गई।

बाधाओं के भीतर ही तो कार्यसिद्धि करती है वास्तव

एक जगह हम गये सत्संग था, म.सा. मिले एक दिन पहले, म. सा. ने कहा अरे-अरे अरे! इतना अच्छा काम करते हो। अरे ये तो बहुत अच्छा काम है, अरे! आप तो ये अनाथ बच्चों का पालन पोषण करते हो। अच्छा-अच्छा-अच्छा, ये ऑपरेशन कराते हो, बहुत अच्छा काम है। 5-4 लोगों ने बोला-दान। दान बोला लिख लो कैलाश जी 5 हजार कल दे दंगे। बहुत खुशी हुई। एक ने कहा 1100 रुपये मेरे अभी ले लो तो ले लिए रसीद दे दी उनको। म. सा. बोले कल आ जाना कल मेरा व्याख्यान है, कल आ जाना। बड़ी खुशी हुई। आधा घण्टा खुशी के मारे नींद नहीं आई। सोचा म. सा. कितना अच्छा प्रवचन करते? इनका व्याख्यान बहुत अच्छा होता है। एक छोटा सा मैंने साढ़े तीन सौ रुपये का टेप रिकॉर्डर खरीदा था।

कृपया: आगले अंक में...

सम्पादकीय

सुबह बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना..... और भी कई काम। उधर, दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की जो रात-दिन अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है। यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या से हट कर कोई अन्य कार्य करें जिसमें धनोपार्जन की गुंजाइश न हो, उदाहरणार्थ -निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा—“यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख होगा—अथवा इतने घंटों की कार्य-हानि के अलावा कुछ भी हाथ न लगेगा।” उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी—“आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।” सामान्य कार्यक्रम के अन्तर्गत सुबह पांच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरान्त भी घर पहुँचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाय तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं - धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

और हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का -संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तौलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हट कर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गयी है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें 'अतिरिक्त कार्य' लगता है, इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुख भी होता है। आईए, हम अपनी सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप में मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ-साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

व्यायाम करें स्वस्थ रहें



व्यायाम हमारी सेहत में जो बहुत महत्वपूर्ण योगदान देता है, वह है सूजन में कमी। फुरसत के पलों की शारीरिक गतिविधि से दीर्घकालीन सूजन कम होती है। यह भी ज्ञात हुआ है कि सिर्फ छः मिनट तेज चलने से ही बड़े लोगों में सूजन कम हो जाती है। व्यायाम के साथ एंटीऑक्सीडेंट्स वाले डाइट सप्लीमेंट्स लेने से भी सूजन में कमी आती है।

आदर्श सेहत प्राप्त करने के लिए व्यायाम बहुत लाभदायक होता है। इसके लाभ आजमाए हुए और गहरे हैं। आदर्श सेहत के लिए दोनों तरह के व्यायाम आवश्यक है प्रतिरोध, जैसे वेटलिफ्टिंग या पुश-अप और हृदय के व्यायाम जिनमें पैदल चलने, दौड़ने, तैरने और साइकल चलाने जैसी गतिविधियाँ द्वारा हृदय गति बढ़ाना शामिल है।

सत्य - जाग्रति

'स' और 'त' इन दो अक्षरों से बना है 'सत्य'। 'स' यानी बाहर की दुनिया का सत्य। जैसे नाक के साथ सुगंध, आँख के साथ दृश्य, कान के साथ ध्वनि, जुबान के साथ स्वाद, त्वचा के साथ स्पर्श, मन के साथ विचार। आज तक सिर्फ 'स' को ही जाना गया है इसलिए लोग सत्य का असली अर्थ नहीं समझ पाए। अब 'त' शब्द की गहराई भी समझेंगे।

'त' यानी 'तेज तत्व'। तेज यानी अर्क। 'तेज' हमारा मूल अस्तित्व है। जैसे शक्कर का मूल तत्व है मिठास, पानी का मूल तत्व है गीलापन, वैसे ही हमारा मूल तत्व है 'स्वसाक्षी।' हम अपने आपसे कभी यह सवाल ही नहीं पूछते कि 'हमारा मूल तत्व क्या है?' क्या हमने कभी चेतन होकर इस बारे में सोचा है? क्या खुद को कभी चखकर देखा है, अपना स्वाद कभी लिया है, अपने होने के अनुभव को कभी जाना है? जिन्होंने अपना स्वाद लिया वे स्वर्ग में हैं। हमारा मूल तत्व है, तेज सत्य पाना। स्व के अर्क में स्थापित होना यानी स्वर्ग में स्थापित होना। नरक यानी 'न अर्क', जो स्वयं से वंचित है। जो स्वयं से दूर हुआ वह नरक में है। जिन्होंने भी ये शब्द बनाए, उन्होंने स्वयं को जाना था, सच्चे सोने को पहचाना था।

केंद्र के अधिकारियों ने देखी नारायण सेवा



भारत सरकार के प्रबंध संस्थान की ओर से अनुभाग अधिकारियों के सचिवालय प्रशिक्षण तथा विभिन्न मंत्रालयों में कार्यरत 26 सदस्यीय दल ने

नारायण सेवा संस्थान के हिरण मगरी सेक्टर-4 व बड़ी ग्राम स्थित परिसरों में सेवा कार्यों व उनके प्रबंधन का अवलोकन किया। सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबंधन संस्थान के सहायक निदेशक भगवान पाधे ने बताया कि इस दल ने स्वयं सेवी संस्था के रूप में नारायण सेवा संस्थान की कार्यप्रणाली एवं प्रबंधन का अध्ययन किया। दल का स्वागत निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल व डॉ. ए. एस. चुण्डावत ने किया। सभी अधिकारियों का संस्थान की ओर से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन महिम जैन ने किया।

मुस्कान मानवता की

१६/१०/२०१६

ईमानदारी रूपी हीरा

हमारे पाली में एक साथी थे, उनकी गर्दन भी ऐसे ही घूमती रहती थी। एक दिन मैंने उनसे कहा—साहब मुझे एडवान्स चाहिए। कल आप मुझे एप्लीकेशन दे देना, मैं आपको दे दूँगा, आपका जनरल एचीवमेंट फण्ड है उससे उधार ले सकते हो। दूसरे दिन एप्लीकेशन लेकर गया, वापस उनकी गर्दन दौँये—बाँये हो रही थी, कभी दौँये कभी बाँये। मैंने सोचा ये तो गजब हो गया, कल तो हाँ भर ली, अभी मना कर रहे हैं। तोड़ निकाला, दस्तखत करके मैंने तो एप्लीकेशन दे दी। मैंने कहा—मैं तो साहब डर गया था। बोले क्यों डर गये थे? मैंने कहा—मेरा तो थोड़ा बी.पी. हाई हो गया था, बोले क्यों? मैंने कहा—आप गर्दन ऐसे कर रहे थे ना, तो मैंने सोचा कि आप मना कर रहे हो, आप मेरे को जी.पी.एफ. बनाकर नहीं दोगे। आप तो मालिक हो, यदि आप नहीं दोगे तो मैं कहाँ से ले पाऊँगा? मैं जबदस्ती तो नहीं ले सकता।

उन्होंने कहा—

कैलाश जी, मेरी आदत पड़ गई गर्दन दौँये—बाँये करने की, सर को ऊपर—नीचे करने में एक्सपर्ट कर दो ना। हाँ भरो, क्यों मना करते हो। भगवान भी मना करेगा, तो क्या करोगे? आप को ऑक्सीजन की कमी पड़ गई। आप कहोगे कि भगवान थोड़ी हवा भेज। नहीं हवा तो नहीं भेजता, तुम्हें बिना हवा के रखूँगा, तो वो मर जायेगा।

आप को प्यास लगी, ये

नदिया ना पिये कमी, अपना जल,

वृक्ष ना स्वाचे कमी, अपना फल,

अपने तन का, मन का, धन का,

करे जा दूँगो की, दान रे।

वो सच्चा इन्सान है

इस धरती का, भगवान रे।(90)

नदियाँ जल नहीं देगी तो आप क्या करोगे? इसलिये वो मेरे साथ में थे, हँसते हुए प्रेमपूर्वक बोल दिया। बोले - कैलाश जी आदत बदलूँगा, आदत बदलना चाहिये।

हैं सभी बन्दे प्रभु के, बन्दगी उनकी करो।

प्रेम की बोओ फसल, आनन्द फल फिर बाँट लो। (91) आनन्द फल आपके और मेरे लिये है। दधीचि ऋषि की तस्वीर लगाते हैं। दधीचि ऋषि का मन्दिर देखें, दधीचि ब्राह्मण होते हैं, वो उनके वंशज हैं। अरे! जीवन तो बहुतों का चला गया, करोड़ों मर गये, दधीचि ऋषि की ही जय-जयकार क्यों करते हैं?

जब पाली में था। एक विवाह में गया, विवाह में पण्डित जी ने पूछा दुल्हे राजा को—आपके पिताजी का क्या नाम है? नाम बता दिया, आपके दादाजी का क्या नाम है? आपका परदादाजी का क्या नाम है? इधर—उधर देखे, बताता हूँ, आपको मालूम है क्या? नहीं मेरे को मालूम नहीं है। आपको आपके परदादाजी का नाम मालूम नहीं। और आप आज क्या कर रहे हो—बाबूडा? सुभाष चन्द्र बोस जी ने इतना अच्छा काम किया, बहुत गरीबी में थे, तब भी बच्चों को पाठ्य पुस्तकें दिला दी। खुद ही खुद खाना चोरी करना है। खुद क्या खाना? बाँट-बाँट कर खाओ और बैकुण्ठ में जाओ।

कर्म ही पूजा है

मैं आपको निवेदन कर रहा था पाली—मारवाड़ में एक बार मैं सेविंग बैंक में काउंटर पर पीछे बैठा था। हेड ऑफिस में सेविंग का कार्य और बढ़ा दिया था तो एक रजिस्ट्री लेने के लिये एक डॉक्टर साहब आये, नमस्कार किया और बोले - तीन दिन से पोस्ट मैन साहब मेरे घर रजिस्ट्री ला रहे हैं, पर मेरी ड्यूटी हॉस्पिटल में रहती है और मैं घर पर नहीं रहता आप जरा मेरी बहुत जरूरी रजिस्ट्री आयी है, कृपा करके दे दीजिये, मैं एलोपैथिक डॉक्टर हूँ। अब वो हमारे रजिस्ट्री बाबू रूक गये, बोले—“डॉक्टर साहब, रजिस्ट्री तो कल आपके घर पर ही लायेंगे”, आप कल 11-12 बजे घर पर मिल जायें। उन्होंने कहा—मैय्या रजिस्ट्री बहुत जरूरी है, मैं कल बाहर भी जा रहा हूँ, मैं डॉक्टर हूँ मैया। अरे! डॉक्टर साहब क्या डॉक्टर हूँ, डॉक्टर हूँ।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़

थार मरुस्थल

थार मरुस्थल भारत के उत्तरपश्चिम में तथा पाकिस्तान के दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह अधिकांश तो राजस्थान में स्थित है परन्तु कुछ भाग हरियाणा, पंजाब, गुजरात और पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांतों में भी फैला हुआ है। थार मरुस्थल अद्भुत है। गर्मियों में यहाँ की रेत उबलती है। इस मरुभूमि में साठ डिग्री सेल्सियस तक तापमान रिकार्ड



किया गया है। जबकि सर्दियों में तापमान शून्य से नीचे चला जाता है। गर्मियों में मरुस्थल की तेज हवाएँ रेत के टीलों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है और टीलों को नई आकृतियाँ प्रदान करती है।

जन-जीवन के नाम पर मरुस्थल में मीलों दूर कोई-कोई गाँव मिलता है। पशुपालन (ऊँट, भेड़, बकरी, गाय, बैल) यहाँ का मुख्य व्यवसाय है। दो-चार साल में यहाँ कभी बारिश हो जाती है। कीकर, टीट, फोगड़ा, खेजड़ी और रोहिड़ा के वृक्ष कहीं-कहीं दिखाई देते हैं। इंदिरा नहर के माध्यम से कई क्षेत्रों में जल पहुँचाने का प्रयास आज भी जारी है।

राजस्थान में मरु समारोह (फरवरी में) - फरवरी में पूर्णमासी के दिन पड़ने वाला एक मनोहर समारोह है। तीन दिन तक चलने वाले इस समारोह में प्रदेश की समृद्ध संस्कृति का प्रदर्शन किया जाता है। प्रसिद्ध गेर व अग्नि नर्तक इस समारोह का मुख्य आकर्षण होते हैं। पगड़ी बांधने व मरु श्री की प्रतियोगिताएँ समारोह के उत्साह को दुगुना कर देती हैं। सम बालु के टीलों की यात्रा पर समापन होता है, वहाँ ऊँट की सवारी का आनंद उठा सकते हैं और पूर्णमासी की चांदनी रात में टीलों की सुरम्य पृष्ठभूमि में लोक कलाकारों का उत्कृष्ट कार्यक्रम होता है।



सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दिताओं की सेवा में सतत् संस्कारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहाय्यार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

श्री दुर्गा मन्दिर ट्रस्ट, शाहदरा (दिल्ली)

दिनांक एवं समय

24 से 30 जुलाई, 2016

दोपहर 3 बजे से सांय 7.00 बजे तक

मुख्य यजमान : श्री श्याम कुमार (एंडवांकेंट) रामनगर

स्थान : श्री दुर्गा मन्दिर, बी - 85, ज्योति कॉलांनी, मंन दुर्गापुरी चौक, शाहदरा (दिल्ली - 32.)

कथा व्यास: पुज्य दयालु जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करावेंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र: 9891184382, 9312046346

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

॥ 'निःश्वतजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ॥

कमला देवी
कोषाध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान

वन्दना
निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

जगदीश आर्य
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

परम पूज्य कैलाश जी 'मानव' संस्थापक चंयमन नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर